M.A. Semester - II

III - Paper

Theoretical Perspectives on Development

By —: Ms. Bushra Fatima

Scanned with CamScanner

Unit IV

Critical Perspective On Development

(1) Neo-Marxism
नव मार्क्सवाद

1870 के दशक में ऐसे विचार थे कि Marx की विचारधारा ने बाकि सारी चीजें गौण कर दी है जबकि "Franfurt School" इसने Neo-Marxism को जन्म दिया। इस सम्प्रदाय से तात्पर्य सामाजिक अनुसंधानकर्ताओं और दर्शनशास्त्रीयों के उन सम्प्रदाय से है जिसने एक जुट होकर 1923 में मार्क्स को नए सिरे से अध्ययन किया। इस School को पहले German के Franfurt नगर में स्थापित किया। इसे "The Institute for Social Research" नाम दिया गया। इस सम्प्रदाय से जुड़े लोग तात्कालिक समाज के आलोचक थे। वो Classical theories से असहमत थे। इनका मानना था कि यूरोपीय समाज शोषित समाज है। Frankfurt का उद्देश्य अर्थव्यवस्था, मनोविज्ञान, संस्कृति, तात्कालिक पूंजीवादी समाजों के बीच सम्बन्ध को देखना। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समूह अनुसंधान तथा सिद्धान्त निर्माण को अपनाया। उनके इसी सिद्धान्त

को "आलोचनात्मक सिद्धान्त" कहा जाता
Frankfurt या आलोचनात्मक सिद्धा-
का ही दूसरा नाम नव-मार्क्स
Neo-Marxism प्रचलित हुआ। नव-
मार्क्सवाद वह है" जिसमें कोई भी
सामाजिक सिद्धान्त या सामाजिक
मानवशास्त्रीय विश्लेषण में Marx
Fredrich तथा Engels को अपना
मूल सन्दर्भ बताता है। इन नए
सिद्धान्तों में मार्क्सवादी विचारों को
लिया जाता तथा अन्य सामाजिक
सिद्धान्त की परम्परा को भी खुला
सम्मिलित किया जाता है। समाज
में नव-मार्क्सवादियों ने Marx की
व्याख्या एकदम नए सिरे से
प्रस्तुत की। Franfurt के विस्तृत
स्वरूप ने नव-मार्क्सवादियों को
आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी इसके
विचारकों ने माना की मार्क्सवादी
विचार एक बौद्धिक विद्या और समाजवादी विचार
धारा की तरह जीवित रहना है
तथा इसके संशोधन की आवश्यकता
है इसके विचारधारा ने नव-मार्क्सवाद
को जन्म दिया। इस तरह से नव-
मार्क्सवाद Frankfurt School का
विस्तार हुआ।

Frankfurt School के
उद्भव के प्रमुख कारक है:

Frankfurt School के
उद्भव के
कारक

- Max Weber की आकृति संरचना
- पहले विश्व युद्ध के बाद फासीवाद का विकास
- स्टालिनवाद का उदय
- प्रो मार्क्सस की राजनीति

Frankfurt School के संस्थापक Falix Bal है, तथा इसके तीन प्रमुख विचारक थे :

1- जार्ज ल्युकस।
2- मैक्स होरखेमेर।
3- थियोडोर एडोरनो।

होरखेमेर, एडोरनो के सहयोग से समाजशास्त्र की Frankfurt पत्रिका का प्रकाशन 1955 में किया। इसमें पूंजीवाद के बारे में लिखा है, पूंजीवाद में उदारवाद को छोड़ दिया गया परिणामस्वरूप उदार पूंजीवाद अब एकाधिकार पूंजीवाद बन गया। वास्तविकता यह है कि Marx ने बहुत पहले कहा था कि पूंजीवाद का विकास "फासीवाद" सही है और

और Marx ने एक मुक्त आदिम समाज की कल्पना की थी ऐसा आदिम समाज जो दमन का शिकार न होगा, शोषण से मुक्त होगा, इस प्रकार Frankfurt School ने ही नव-मार्क्स को जन्म दिया था। नव-मार्क्सवाद का विकास प्रमुख संरचनावादी विचारक लुई Altuzar, निकोपाले-जाम, मोरिस गोडे लियर, जोन् पियेगोट द्वारा हुआ। नव मार्क्सवाद संरचना संरचनावाद तथा मार्क्सवाद का सम्मिलित रूप है। संरचनावाद सामाजिक जीवन की अमूर्त एवं मूल संरचनाओं को बताती है तथा मार्क्सवाद पूँजीवाद की बुराइयों को बताता है नव-मार्क्सवाद इन्हीं दोनों विचारधारा के सम्मिश्रण को बताता है। नव-मार्क्सवाद मानसिक क्रियाओं तथा उनसे उत्पन्न संरचनाओं को केन्द्र मानकर Marx के विचारों का संरक्षण करता है।

नव-मार्क्सवादी सिद्धान्त के अध्ययन के उपागम :

नव-मार्क्सवादियों ने Classical मार्क्सवादियों को मुख्यतः दो सन्दर्भ में देखा। जेम्स पोटर, फ्रॉलड, थॉमसन हैने अडरसन ने नव-मार्क्सवाद के अध्ययन के दो उपागम बताए हैं।

1- नव ग्राम्सी सिद्धान्त या विमर्श का विश्लेषण।

2- विश्लेषणात्मक मार्क्सवाद।

इन दोनों का उद्गम एक साथ हुआ, ये दोनों मार्क्सवाद का नवीनीकरण चाहते हैं। मार्क्स के आर्थिक निर्धारणवाद तथा पूंजीवादी विमर्श विश्लेषण के अनुसार सामाजिक विज्ञानों में विश्लेषण की भविष्यवादी आवश्यकता नहीं है। विमर्श में सम्बन्धों का विश्लेषण करना है और मनुष्य को इतिहास की उपज मानना चाहिए।

जबकि विश्लेषणात्मक मार्क्सवादी उपागम अपनी विशेष पहचान रखता है। यह प्रत्यक्षवाद तथा उसके विभिन्न प्रकारों से प्रभावित है। इसके अनुसार, मार्क्सवाद को अपनी महत्वपूर्ण धारणाओं के अनुसार कार्य-कारण प्रकल्पना के निर्माण पर आधारित रहना चाहिए। इसके विपरीत ग्राम्सी का सिद्धान्त व्याख्यात्मक रूप को प्रस्तुत करता है। देखा जाए तो दोनों उपागम ज्ञान से जुड़े मुद्दों को उठाते हैं दोनों का सम्बन्ध "ज्ञानमिमांसा" "Epistemology" को

परम्परा से है। दोनों ही मार्क्सवादी विचार-धारा के नवीनीकरण पर बल है।

नव-मार्क्सवादी प्रमुख विचारक : नव मार्क्सवाद के केन्द्र बिन्दु "Marx" है। कुछ नव-मार्क्सवादी विचारक इस प्रकार हैं :

नव-मार्क्सवादी विचारक

Anthonio Gramci (1891-1937) Itly	Althussar (1918-1990) France के Alziria	Hebberma (1929- Germany

समाजशास्त्रीय विचारक में ग्राम्सी का नाम उल्लेखनीय है, क्योंकि उन्होंने Marx के आर्थिक निर्धारणवाद का खण्डन किया। Hebbermas ने अपने सिद्धान्त में सम्प्रेषण व्यवस्था व भाषा पर विशेष बल दिया। Althusar ने Marx के ऐतिहासिक भौतिकवाद का पुर्ननिर्माण किया। उस पर संरचनावादी सम्प्रदाय का गहरा प्रभाव था। ये मार्क्सवादी संरचनावाद के जनक कहे जाते हैं। वे मार्क्स

PAGE :
DATE : / /

के अधो - संरचना तथा अधि - संरचना को इसमें सम्मिलित करते है।

नव - मार्क्सवाद के कारण तथा विशेषताएँ :

1- नव - मार्क्सवाद मार्क्सवादी इतिहास पर अधिक बल देते है।

2- इनके अनुसार पूँजीवादी व्यवस्था के पीछे जो भी मूल संरचनाएँ है वे ही वास्तविक संरचनाएँ है।

3- ये आर्थिक निर्धारणवाद को ही महत्वपूर्ण मानते है।

4- वे अर्थव्यवस्था को मौलिक व्यवस्था स्वीकार करते है। जिसमें परिवर्तन होने पर सम्पूर्ण समाज मे परिवर्तन आता है।

विशेषताएँ :

1- नव - मार्क्सवाद पूँजीवाद की वास्तविकता को जानने का प्रयास करता है।

Scanned with CamScanner

तथा अर्थव्यवस्था तीन मूल घटक है और नव-मार्क्सवाद इन तीन घटकों का अध्ययन करता है।

3- नवमार्क्सवाद ऐतिहासिक एवं अनुभवी अध्ययन पद्धतियों के साथ अन्य पद्धतियों का भी प्रयोग करता है।

4- नव-मार्क्सवाद आर्थिक कारणों के साथ-साथ धार्मिक सांस्कृतिक कारकों का भी अध्ययन करता है। क्योंकि सभी कारक सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष रूप में, मार्क्सवाद तथा नव-मार्क्सवाद में केवल अन्तर इतना है कि नव-मार्क्सवाद, शास्त्रीय मार्क्सवाद का वह संशोधित रूप है, जिसमें संरचनावाद, मानसिक प्रक्रियाओं एवं आधिपत्य जैसे अन्य विद्वानों के विचारों को भी सम्मिलित किया जाता है तथा इनको समन्वित कर एक नवीन दृष्टि से पूंजीवादी व्यवस्था का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता है।